दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

8 Test

(प्राचीन इतिहास)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–H1

Name: SUNIL **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): HINDI **Reg. Number:** Awake-19/B13

Center & Date: DELHI 29/07/19 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 7105724

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ नं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: 2½ × 20 = 50

Identify the following places marked on the map supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your question-cum-answer booklet. Locational hints for the each of the places marked on the map are given below seriatim. 2½ × 20 = 50

(i) एक महाजनपदकालीन स्थल

A Mahajanapada site

चंपा : भागलपुर जिला, बिहार
- अंग महाजनपद की राजधानी
- चित्रित धूसर व उत्तरी - काले चमकीले मृदभाण्डों की प्राप्ति
- वैदिक कालीन हथियार, हेलमेट भी मिले हैं

(ii) एक राजधानी नगर

A capital city

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iii) एक मौर्योत्तरकालीन स्थल

A post-Mauryan site

नासिक = नासिक जिला, महाराष्ट्र
- सातवाहन शासकों की राजधानी।
- प्रति 12 वर्ष पर कुंभ मेले का आयोजन।
- सातवाहनों के सिक्के, बौद्ध स्तूप व विहार मिलते हैं, जो एक मंजिला व द्विमंजिला है। pillars का प्रयोग मिलता है।

(iv) एक सैंधव स्थल

An Indus site

संघनवाला = पंजाब प्रांत, पाकिस्तान।
- हड़प्पा काल की बस्ती व ~~मा~~ उपकरणों के साक्ष्यों की प्राप्ति।
- गेहूं, जौ की कृषि के साक्ष्य; गाय, बैल के साक्ष्य।
- टेराकोटा निर्मित मातृदेवी की मूर्ति भी प्राप्त हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(v) एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल

A Chalcolithic site

कायथा = उज्जैन जिला, मध्यप्रदेश।
- ताम्रपाषाणकालीन ताँबे व पाषाण निर्मित औजार, उपकरण व हथियारों की प्राप्ति
- Microliths व composite tools की भी प्राप्ति
- तिलबीज, धान्यागार के साक्ष्य
- मानव बस्ती (जोणिकरण युक्त) के साक्ष्य।

(vi) एक मध्यपाषाणकालीन स्थल

A Mesolithic site

- भीमबेटका = रायसेन जिला
- गुफा आवास व शैल चित्रों की प्राप्ति
- मानव के समूह में निवास करने के साक्ष्यों की प्राप्ति
- लेवेल्लोइसियन तकनीक से निर्मित पाषाण औजारों की प्राप्ति
- इसी के निकट हथनौरा भी स्थित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(vii) एक नवपाषाणकालीन स्थल

A Neolithic site

चेचर = बिहार

- कृषि साक्ष्यों (विभिन्न फसलों - गेहूँ, चावल) की प्राप्ति।
- पशुपालन के साक्ष्य। जैसे भेड़, गाय।
- Microliths व हड्डियों के बने औजारों की प्राप्ति।
- इसी के निकट सेनुआर भी स्थित है।

(viii) एक बुद्धयुगीन प्राचीन स्थल

An ancient Buddhist site

बोधगया = गया जिला, बिहार

- बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- बोधिवृक्ष को गौड़ नरेश शशांक ने 7th CE में क्षति पहुँचाई।
- कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने इस स्थल की यात्रा की थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ix) एक आरंभिक राजधानी नगर

An early capital city

~~मगध~~ : पटना जिला, बिहार
पाटलिपुत्र
- मगध महाजनपद की राजधानी
- उदायिन ने पाटलिपुत्र को बसाया था।
- कालांतर में मौखरि वंश व गुप्तों ने भी शासन किया।
- प्रमुख व्यापारिक - वाणिज्यिक केंद्र

(x) एक प्राचीन गणतंत्र

An ancient republic

शाक्य = नेपाल
- लुंबिनी वन, कपिलवस्तु आदि क्षेत्र सम्मिलित
- बुद्ध की जन्मस्थली
- इसी कारण बुद्ध को 'शाक्यसिंह' भी कहा जाता है।
- आंतरिक कमजोरियों व संघर्षों के कारण शीघ्र ही पड़ोसी राजतंत्रों द्वारा अधिग्रहीत कर लिया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थल

A famous Buddhist site

(xii) एक मौर्यकालीन स्थल

A Mauryan site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xiii) एक प्राचीन शैव स्थल

An ancient Shaiva site

तिगवाँ = जबलपुर जिला, मध्यप्रदेश

• प्रारंभिक नागर शैली में गुप्तकाल में निर्मित शैव मंदिर।

• विशेषताएँ : गर्भगृह
प्रांतपथ
अलंकरण की प्रचुरता
चबूतरे पर निर्माण
चहारदीवारी का अभाव

(xiv) एक राजधानी नगर

A capital city

गंजम = गंजम जिला, ओड़िशा

• माठर वंश की राजधानी

• कालांतर में ओड़िशा शैली (नागर शैली की एक शाखा) में निर्मित मंदिर भी मिले हैं।

• बौद्ध स्तूप, विहार व बुद्ध मूर्तियाँ भी मिली हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xv) एक चोलकालीन अभिलेख स्थल

A Chola period inscription site

उत्तमेरूर = कांचीपुरम जिला, तमिलनाडु
- चोल शासक परांतक प्रथम का 919 ई का अभिलेख प्राप्त।
- इसमें स्थानीय संस्थाओं - सभा, नागर, नाडु, उर के गठन, चुनाव, कार्यप्रक्रिया आदि का उल्लेख मिलता है।

(xvi) एक संगमकालीन स्थल

A Sangam period site

- मदुरै = मदुरै जिला, तमिलनाडु
- पाण्ड्य शासकों की राजधानी।
- प्रसिद्ध सांस्कृतिक व व्यापारिक केंद्र।
- 'घटिका' के रूप में शैक्षिक केंद्र की बहुलता भी मिली है।
- कालांतर में 17th ई में नायक शासकों द्वारा 'मीनाक्षी' मंदिर का निर्माण कराया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक गुप्तकालीन मंदिर स्थल

A Gupta period temple site

(xviii) एक प्रसिद्ध गुफा स्थल

A famous cave site

बाघ = धार जिला, MP
· गुप्तकालीन गुफा स्थल।
· मूर्ति व चित्र कला हेतु प्रसिद्ध।

लंघनाज = मेहसाणा जिला, गुजरात
· मध्यपाषाणकालीन गुफा स्थल।
· शैल चित्रों की भी प्राप्ति।
· मध्यपाषाणकालीन औजार - scrapers, Borers, pointers आदि मिले हैं।

· भीमबेटका = सिहोर जिला, MP।
· पुरापाषाणकालीन गुफा स्थल।
· शैल चित्रों - बहुरंगी, रंगों का प्रयोग आदि की प्राप्ति।
· Direct percussion तकनीक से निर्मित औजार -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xix) एक प्राचीन विश्वविद्यालय

An ancient university

नालंदा = नालंदा जिला, बिहार

- कुमारगुप्त द्वारा विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया गया।
- प्रमुख बौद्ध शिक्षा स्थल।
- इसी के निकट ओदंतपुरी विश्वविद्यालय भी स्थित है।

(xx) एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर

A famous Sun temple

- गुजरात के सोलंकी शासकों द्वारा नागर शैली में निर्मित।
- ~~विशेषताएँ~~ - मोढ़ेरा
  आमलक
  उरुशृंग
  ऊँचे चबूतरे पर निर्माण
  चहारदीवारी
  गर्भगृह।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (a) पुरातात्त्विक प्रमाण भारतीय इतिहास के ज्ञान के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, जिनसे भारत के अंधकार युगों पर प्रकाश पड़ता है। विश्लेषण कीजिये। 20

Archaeological evidences are important source of knowledge of Indian history, as they help unravel the undocument periods. Analyse. 20

इतिहास लेखन हेतु प्रयुक्त स्रोतों को दो मुख्य भागों - साहित्यिक व पुरातात्त्विक भाग में बाँटा जाता है। प्राचीन भारत के लगभग 95% भाग की जानकारी का स्रोत पुरातात्त्विक स्रोत है; जिसमें अभिलेख, स्मारक, सिक्के, मुद्रा, उपकरण, आदि को शामिल किया जाता है।

पुरातात्त्विक स्रोतों की विशेषतायें -

(i) अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय। अपने समयकाल को अधिक बेहतर तरीके से प्रतिबिंबित करते हैं।

(ii) छेड़छाड़ किये जाने की संभावना कम। अतिशयोक्तिपूर्ण दृष्टि कम।

(iii) लंबे समय तक विद्यमानता।

उपयोगिता -

(i) पाषाणकाल = लेखन कला के अभाव के कारण पुरातात्त्विक स्रोत ही अध्ययन का एकमात्र विकल्प।

a. गुफा स्थलों व वहाँ की गई चित्रकारी से सामाजिक परिस्थिति, आवास आदि की जानकारी। जैसे भीमबेटका।

b. विभिन्न तकनीकों व पत्थरों से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्राप्त निर्मित औजारों, उपकरणों से कलात्मक तकनीक, आर्थिक जीवन की जानकारी

(ii) IVC = लिपि न पढ़े जाने के कारण अभी भी पुरातात्विक स्रोतों पर निर्भरता।
- धान्यागार, स्नानागार, जलाशय, लिपि, मुहर, मूर्तियां, नगर नियोजन, उपकरण आदि तात्कालिक आर्थिक-सामाजिक-धार्मिक जीवन की जानकारी देते हैं।

(iii) ताम्रपाषाण = पुनः लेखन कला के अभाव के कारण तांबे की वस्तुएँ व उपकरण, ईंट निर्मित आवास, Microliths व composite tools ही जानकारी के प्राथमिक स्रोत हैं।

(iv) वैदिक काल = ग्रंथों को लिखित स्वरूप न मिल पाने के कारण साहित्यिक स्रोत की पुष्टि हेतु पुरातात्विक स्रोतों पर निर्भरता बनी हुई है। जैसे आर्यों के भौगोलिक विस्तार, प्रारंभिक राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था।
उदा.: हाल ही में सिनौली (बागपत, UP) के उत्खनन से प्राप्त सामग्री।

(v) लेखन कला के उद्भव के बाद भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अनेक जानकारियों का विश्वसनीय स्रोत पुरातात्त्विक स्रोत रहे हैं जैसे-

- अशोक के अभिलेख
- मौर्योत्तर काल में ग्रीक, कुषाण, सातवाहनों के सिक्के।
- मौर्योत्तर काल के अभिलेख। जैसे जूनागढ़ अभिलेख।

पुरातात्त्विक स्रोतों की सीमाएँ-

(i) मौर्यों के पूर्व के अभिलेख न पाया जाना।
(ii) महाजनपद काल के पूर्व सिक्कों का अभाव।
(iii) समय के साथ नष्ट होते जाना।
(iv) कई स्रोतों का विलुप्त हो जाना।
(v) पर्यावरणीय हानि।

सीमाओं के बावजूद पुरातात्त्विक प्रमाण भारतीय इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण अध्ययन सामग्री है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) प्राचीन भारत के धार्मिक साहित्यों का मुख्य उद्देश्य जहाँ एक तरफ अपने धर्म के सिद्धांतों पर उपदेश देना था वहीं दूसरी तरफ धर्मेत्तर साहित्य प्राचीन काल की राजनीतिक गतिविधियों को विश्लेषित करते हैं। चर्चा कीजिये। 15

While religious literature of ancient India preached the religion principles the secular literature depicted the political activities of ancient times. Discuss. 15

प्राचीन भारतीय साहित्य, इतिहास में धार्मिक व गैर धार्मिक - दोनों साहित्यों ने न केवल अपने-२ क्षेत्र का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि एक-दूसरे को प्रभावित व प्रेरित भी किया है।

धार्मिक साहित्य -

(1) ब्राह्मण = वेद, उपवेद, पुराण, स्मृति, धर्मशास्त्र।
बौद्ध = त्रिपिटक, विभाष, मिलिंदपन्हो।
जैन = आगम ग्रंथ।

(2) ~~भूमिका/महत्व~~ / उद्देश्य -
a. धार्मिक सिद्धांतों का प्रसार -
(i) कल्पसूत्र में विभिन्न यज्ञों का उल्लेख।
(ii) स्मृतियों में आश्रम, वर्ण, जाति, गोत्र आदि व्यवस्थाओं का वर्णन।
(iii) वैदिक कालीन साहित्य में विभिन्न देवताओं, कर्मकाण्डों, आदि का उल्लेख।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) पुराणों में मूर्ति, मूर्तिपूजा, मंदिर, तीर्थ, व्रत, दान दक्षिणा के उल्लेख।

(v) बौद्ध ग्रन्थों में बुद्ध की शिक्षाएँ, जातक कथाएँ, संघो की विशेषताएँ, ~~धर्म~~ ईश्वर, आत्मा पर विचार आदि का उल्लेख।

(vi) जैन ग्रन्थों में त्रिरत्न, पंच अणुव्रत, दसशील, विभिन्न संप्रदायों आदि का उल्लेख।

b. गैर धार्मिक महत्व -

(i). कला - स्थापत्य, मूर्ति, चित्र आदि को बढ़ावा।

(ii) सामाजिक रीति-रिवाजों, प्रथाओं का विवरण। / जैनीकरण ~~व~~ इसे ~~कम~~ कुरीति पर बल

(iii) राजाओं पर प्रभाव।

(iv) जैन व बौद्ध धार्मिक साहित्य द्वारा नागरीकरण में योगदान।

गैर धार्मिक साहित्य -

a. राजनीतिक गतिविधियों में योगदान -

(i) अर्थशास्त्र - मौर्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था, अधिकारीगण, विभाग, सप्तांग सिद्धांत व मण्डल सिद्धांत, राज्य-व्यवस्था के संरक्षण हेतु उपाय आदि का उल्लेख।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ii) प्रयाग प्रशस्ति = समुद्रगुप्त की विजयों, साम्राज्य विस्तार की जानकारी।

iii) हाथीगुंफा अभिलेख = खारवेल के शासन की जानकारी

iv) हर्षचरित = हर्ष के शासन काल की जानकारी प्राप्त होता।

b. अन्य जानकारियाँ -

i) अर्थशास्त्र में धर्मकी जगह अर्थ पर बल का उल्लेख, साथ शूद्रों व महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के संकेत।

ii) हाथीगुंफा अभिलेख से चेदि वंश के कोमे धार्मिक जानकारी भी उपलब्ध होना।

iii) संगम साहित्य में सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक दशा का भी उल्लेख।

वस्तुतः धार्मिक तथा धर्मेतर साहित्य केवल अपने-2 विषय क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) मुद्राएँ तत्कालीन आर्थिक दशा तथा साम्राज्यों के सीमा निर्धारण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। टिप्पणी कीजिये। 15

Coins are important for determining the economic condition and frontier of empires. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास के अध्ययन स्रोत के पुरातात्त्विक भाग के एक उपकरण के रूप में मुद्रा इतिहास पुरातत्त्वविदों के बीच काफी लोकप्रिय रही है, जो तत्कालीन समय के बारे में बहुआयामी जानकारी देती रही है।

आर्थिक दशा की जानकारी -

(i) मौर्यकाल में सिक्कों की बहुलता, विविधता, इस क्षेत्र से संबंधित विभिन्न अधिकारी - टकसाल अध्यक्ष, रूपदर्शक आदि आर्थिक संपन्नता का बोध कराते हैं।

(ii) मौर्योत्तर काल -

a. पोडुका, कावेरीपट्टनम से रोमन सिक्कों की प्राप्ति → रोमन व्यापार का संकेतक।

b. कुषाणों द्वारा सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के जारी किया जाना → पर्याप्त आर्थिक संपन्नता।

c. शकों द्वारा सर्वाधिक मात्रा में चाँदी के सिक्के जारी किया जाना → धातु की बहुलता का प्रतीक।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) गुप्तकाल -
a. सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी हुए → स्वर्णकाल की संज्ञा दी जाती है।
b. बाद के काल में चाँदी के सिक्के व कौड़ियों का प्रयोग आर्थिक → अवनति का द्योतक।

(iv) गुप्तोत्तर काल -
a. सिक्कों की उपलब्धता कम व भूमि अनुदान लेखों का अधिक मिलना → व्यापारिक अर्थव्यवस्था के पतन का सूचक।
b. सिक्कों में शुद्धता का कम स्तर व अनगढ़ सिक्के → दयनीय आर्थिक दशा, तकनीकी विकास का बाधित होना।

साम्राज्य सीमा निर्धारण -
(i) सामान्यत: जिन क्षेत्रों से किसी शासक के सिक्के अधिक मात्रा में मिलते हैं, वह कोर क्षेत्र, तथा जहाँ तक सिक्के मिलते हैं, वह शासन विस्तार का क्षेत्र माना जाता है।
जैसे
(i) मौर्य शासन = हिन्दुकुश → बंगाल
कश्मीर → मैसूर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) कुषाणशासकों का शासन क्षेत्र पार्थियोत्तर भारत न गंगा घाटी तक विस्तृत होना।

(iii) आपसी संघर्षों का ज्ञान जैसे शक-सातवाहन संघर्ष व सातवाहनों द्वारा शकों के सिक्कों पर अपना नाम खुदवाना।

(iv) चन्द्रगुप्त II द्वारा शकों को पराजित कर उस क्षेत्र में अपने नाम से सिक्के चलाना।

(v) पार्श्वमोत्तर क्षेत्र में विदेशी सिक्कों की प्राप्ति → भारतीय उपमहाद्वीप की सीमा का परिचायक।

सीमाएं-

(i) सिक्कों का समय के साथ क्षतिग्रस्त हो जाना।

(ii) कईबार साहित्यिक साक्ष्यों से भिन्नता। जैसे पूर्वमध्यकाल के संदर्भ में।

(iii) अपर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने के कारण पूर्णजानकारी न मिल पाना।

तथापि सीमाओं के बावजूद सिक्के महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध हुए हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) प्राचीन काल में आमजन के बीच धर्मनिरपेक्ष ज्ञान प्रसारित करने में पुराणों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

Evaluate the contribution of Puranas in spreading secular knowledge among the people in ancient times.

पुराण का शाब्दिक अर्थ = प्राचीन कथाएँ

इनकी रचना का काल उत्तरवैदिक व महाजनपद काल माना जाता है तथा मुख्यत: गुप्तकाल में लिखित स्वरूप दिया गया इनकी संख्या 18 है

धर्मनिरपेक्ष ज्ञान प्रसार -

(i) महिलाओं, शूद्रों के प्रति नरम दृष्टिकोण → जातिप्रथा, श्रेणीकरण, महिला अधीनस्थता कम करने में मदद मिली।

(ii) मन्वन्तर, वंश, वंशानुचरित के रूप में राजनीतिक इतिहास की जानकारी के स्रोत।

(iii) भूमि अनुदान, कृषि, व्यवसाय - वाणिज्य का उल्लेख मिलता।

(iv) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
~~ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट~~ गणित, खगोल विज्ञान आदि के संकेत मिलते हैं।

(v) धर्मनिरपेक्ष कला - लौकिक चित्र, नाटक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

के वितरण आदि की प्राप्ति

सीमाएँ -

(i) मुख्यतः हिन्दू धर्म से संबंधित विषयवस्तु।

(ii) कालक्रमों का स्पष्ट विवरण न होना।

(iii) अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण।

(iv) प्रारंभ में अलिखित स्वरूप में होना।

तथापि कहा जा सकता है कि पुराणों ने न केवल धार्मिक, बल्कि धर्मनिरपेक्ष ज्ञान के प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356

ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) गुप्तकालीन विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को भूमिदान प्रथा के संदर्भ में विश्लेषित कीजिये।

Analyze the trend of decentralization during Gupta Period in the context of Bhudana practice.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

गुप्तकाल प्राक् सामंतीकरण का काल था, जिसमें सातवाहनों द्वारा प्रारंभ भूमि अनुदान प्रथा ने महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य किया।

प्रारंभ में भूमिदान जहाँ धार्मिक उद्देश्य के लिए दिए जा रहे थे, वहीं इस काल में इसका स्वरूप विस्तृत होकर 'अधिकारियों को वेतन' के रूप में भी हो गया।

भूमि अनुदान प्रथा व विकेंद्रीकरण

(i) अनुदान प्राप्तकर्ता को उस क्षेत्र में प्रशासनिक अधिकार की प्राप्ति होना।
(ii) राजस्व अधिकार की प्राप्ति।
(iii) उस क्षेत्र में सैन्य अधिकार की प्राप्ति
(iv) नौकरशाही में सामंतों का प्रवेश → राजा की शक्ति में ह्रास।
(v) राजा के प्रत्यक्ष नियंत्रणाधीन भूमि कम होने से शक्ति कम होती चली गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यद्यपि मौर्योत्तर काल में इस प्रथा ने शासक की शक्ति के केंद्रण का कार्य किया था, परंतु गुप्तकाल में इसने व अन्य कारकों - नगरीय अर्थव्यवस्था का ह्रास, परंपरागत रूढ़ियों की मजबूती आदि ने विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) छठीं शताब्दी ई.पू. से चौथी शताब्दी ई.पू. तक सामाजिक व्यवस्था, विशेषकर स्त्रियों की दशा में आए परिवर्तनों को उल्लेखित करें।

Illustrate the changes in the social system, especially in the condition of women, during the 6thC BC to 4th C BC.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

छठी शताब्दी ई.पू का काल नगरीय अर्थव्यवस्था का प्रारंभिक काल था, वहीं चौथी शताब्दी तक यह अपने चरम पर पहुंच चुका था। इस काल में सामाजिक व्यवस्था में हुए परिवर्तनों को निम्नानुसार समझा जा सकता है

(1) स्त्रियों की दशा में –

a. महाजनपद काल = धर्मशास्त्रों में विवरण।
- राजनीतिक भागीदारी व शिक्षा प्राप्ति के अवसर सीमित।

b. मौर्यकाल = और अधिक प्रतिबंध आरोपित।
- भूमिका घरेलू कार्यों तक सीमित रहने लगी।
- अर्थशास्त्र में कुछ सकारात्मक उल्लेख जैसे महिला अंगरक्षक।

c. मौर्योत्तर काल = मनुस्मृति आदि में स्त्रियों पर कई प्रतिबंधों का उल्लेख। जैसे स्त्रियाँ सदैव संरक्षण में रहती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

· आर्थिक गतिविधियों के प्रसार के कारण महिलाएँ शिल्प व कृषि कार्यों में भी संलग्न होने लगीं।

d. गुप्तकाल : धर्मशास्त्रों में स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखने का विचार।
· पुराणों में उदारवादी दृष्टिकोण।
· सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, देवदासी आदि की शुरुआत।

<u>अन्य परिवर्तन</u> : a. दास प्रथा का और अधिक बढ़ जाना।
b. जनजातियों के संस्कृतिकरण, कृषिकरण की प्रवृत्ति का निरंतर बढ़ना।
c. जातियों की शुरुआत व निरंतर प्रगुणन।
d. पितृसत्तात्मक समाज का निरंतर बढ़ते जाना।

उपरोक्त संदर्भों में कहा जा सकता है कि तात्कालीन राजनीतिक, आर्थिक संदर्भों ने समाज व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) हर्षवर्धन की महानता राजनीतिक-प्रशासनिक क्षेत्र में उसके उच्च आदर्शों के अंतर्गत दिखाई देती है। व्याख्या कीजिये।
The greatness of Harshavardhana evident in his high ideals in politico-administrative arena. Explain.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुप्तोत्तर काल में हर्ष का शासन एक उच्च उल्लेखनीय शासन के रूप में उभरकर सामने आता है, जिसने विभिन्न प्रवृत्तियों के बीच सामंजस्य - विकेंद्रीकरण व एकीकरण, धार्मिक बहुलता के साथ एकता का विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

राजनीतिक-प्रशासनिक क्षेत्र में आदर्श :

(i) राजनीतिक विखंडन के काल (सामंतवाद) में भी राजा की शक्ति को बनाए रखा
(ii) पर्याप्त साम्राज्य विस्तार जैसे - गौड़ नरेश, वल्लभी शासक को पराजित किया → महान योद्धा
(iii) चतुर कूटनीतिज्ञ।
(iv) कुशल प्रशासक जैसे रिकॉर्ड विभाग की स्थापना की
(v) लोक कल्याण का दृष्टिकोण जैसे राज्य के राजस्व के एक महत्वपूर्ण भाग को सार्वजनिक कार्यों, विद्वानों को देने में खर्च करना।
(vi) धार्मिक सहिष्णुता का दृष्टिकोण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे हिन्दू, बौद्ध, जैन सभी धर्मों का व्यापक प्रसार हुआ। प्रयाग प्रशस्ति में उसने समस्त राजत्व को दान कर दिया था।

(vii) कला प्रेमी → साहित्य के क्षेत्र में विकास।

~~कह सकते हैं कि~~

(viii) धर्म-विजय की नीति (पराजित क्षेत्रों का प्रत्यक्ष शासन क्षेत्र में सम्मिलित न करना) → व्यावहारिक दृष्टिकोण का परिचायक।

उपरोक्त विश्लेषण हर्ष की इन क्षेत्रों में महानता को प्रदर्शित करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) संगमकालीन दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति के स्वरूप पर चर्चा कीजिये।

Discuss the nature of Vedic culture in South India during the sangam age.

दक्षिण भारत में संगमकाल को मुख्यतः 2nd BCE - 2th CE से चिन्हित किया जाता है। मौर्योत्तर काल से ही इस क्षेत्र में उत्तर भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रवेश के साक्ष्य (संगम साहित्य आदि में) मिलने लगते हैं।

वैदिक संस्कृति के प्रसार के कारण -

(i) उत्तर भारतीय नगरीकरण का प्रसार

(ii) धर्मों का योगदान। जैसे हिन्दू धर्म, बौद्ध व जैन धर्म।

(iii) आपसी संघर्षों में वृद्धि के कारण रीति रिवाजों, शिक्षा पद्धति का प्रवेश।

स्वरूप -

(i) दोनों के मिश्रण से एक संश्लेषित स्वरूप उभरा।

(ii) राजनीतिक क्षेत्र में - शासकों द्वारा वैधता प्राप्ति हेतु उपयोग किया जाना।
- शासकों को पद करने वाला, ब्राह्मणों का संरक्षक आदि स्वरूपों में दर्शाया गया है।

(iii) धार्मिक - तमिल भक्ति का उदय।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(iv) शिक्षा = घटिका, मठ आदि शिक्षा केंद्र के रूप में उभरे।

(v) सामाजिक = क्षैतिज विभाजन का ऊर्ध्वाधर विभाजन में बदलना।

- सामाजिक गतिशीलता व संघर्षों में वृद्धि।
- नए वर्गों का उदय।

कहा जा सकता है कि संगमकाल में वैदिक संस्कृति ने आपसी संश्लेषण को बढ़ावा दिया।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) प्राचीन भारत के कुछ शिक्षण संस्थान अपने दुखद अंत के बावजूद भारतीय संस्कृति और विरासत को सुरक्षित एवं समृद्धशाली बनाने में सहायक सिद्ध हुए। विवेचना कीजिये। 15

Some educational institutions of ancient India, despite their tragic end, proved to be helpful in making Indian culture and heritage safe and prosperous Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्राचीन भारतीय इतिहास न केवल राजनीतिक-प्रशासनिक, आर्थिक स्थिरता व प्रगति का द्योतक रहा है, बल्कि सांस्कृतिक व शैक्षिक क्षेत्र में भी इसने अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी क्रम में देश के विभिन्न कोनों में स्थित शिक्षण संस्थानों ने न केवल भारतीय संस्कृति व विरासत को विकसित किया व सहेजा, बल्कि समृद्ध भी किया।

जैसे-

(i) तक्षशिला = बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केंद्र।
खगोल, गणित, धर्मशास्त्र, मानवविज्ञान का भी प्रमुख केंद्र।

- प्राचीन काल में औषधि चिकित्सा का महत्वपूर्ण केंद्र चरक की चिकित्सा पद्धति इसी पर आधारित थी।
- पाणिनि, चन्द्रगुप्त, कौटिल्य, पतंजलि ने यहाँ शिक्षा प्राप्त की थी।

(ii) बनारस = शल्य चिकित्सा का प्रमुख केंद्र

- सुश्रुत की शल्य चिकित्सा इसी पद्धति पर आधारित थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

• प्रमुख बौद्ध व हिन्दू शिक्षण संस्थान जहाँ धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रकार की शिक्षा दी जाती थी।

(iii) नालंदा = बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केंद्र।
• कालांतर में पाण्डुलिपि चित्रण का विकास भी हुआ।
• विश्वविद्यालय प्रकार के शिक्षण केंद्र का एकमात्र उदाहरण।

(iv) वल्लभी = जैन शिक्षा का प्रमुख केंद्र।
• अनेक विहार मिले हैं।

(v) उज्जैन = खगोल विज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र।
• चन्द्रगुप्त II ने इसे सांस्कृतिक राजधानी बनाया था।

(vi) कांचीपुरम = दक्षिण भारत में प्रमुख ब्राह्मणवादी शिक्षा स्थल।
• उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय संश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका।

(vii) प्रागज्योतिषपुर = गुवाहाटी, असम।
• खगोल विज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र।
• ~~अहोम वंश की~~ राजधानी। कामरूप राज्य की

उपरोक्त शिक्षण संस्थानों ने न केवल शिक्षा प्रसार, बल्कि मूर्तिकला,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चित्रकला, रत्न चिकित्सा, जलवायु, राजनीतिक व्यवस्था, आदि क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

कालांतर में बाह्य आक्रमणों, धनाभाव, नए केंद्रों के उद्भव, नागरीय अर्थव्यवस्था के पतन, परिवर्तित राजनीतिक प्रक्रमों आदि के कारण इनका पतन अवश्य हुआ। लेकिन इनकी अमूल्य निधि को अन्य संस्थाओं ने ग्रहण कर लिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) अलवार एवं नयनार भक्ति आंदोलन में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था एवं धर्म के प्रति विरोध दिखाई देता है। सोदाहरण चर्चा कीजिये। 15

The Alwar and Nayanar Bhakti movement was a manifestation of protests against the prevalent social order and religion. Discuss with examples. 15

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का उदय अक्सर चर्चा का विषय बना रहता है क्योंकि जहाँ एक मत इसके उद्भव को उत्तर भारतीय ब्राह्मणवादी परंपराओं के दक्षिण में प्रवेश (संगमकाल के पतन) से जोड़ता है, तो दूसरा मत इसके प्रवेश के विरुद्ध उभरी चेतना का परिणाम इसके उदय का कारण मानता है।

इसी संदर्भ में 6th c. में उभरे आलवार व नायनार भक्ति आंदोलन को समझा जाता है।

सामाजिक व्यवस्था के प्रति विरोध -

(i) ब्राह्मणवादी विचारों के आगमन से पूर्व क्षैतिज विभाजन था, जबकि बाद में ऊर्ध्वाधर विभाजन हुआ।

(ii) अधिकांश आलवार व नायनार संत निम्न जाति से थे, जबकि ब्राह्मणवादी विचार निम्न जातियों को धार्मिक क्रियाकलापों से प्रतिबंधित करते थे।

(iii) पितृसत्तात्मक समाज के विरोध को आलवार महिला संत आण्डाल व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नायनार महिला संत करैकल अम्मा के रूप में देखा जाता है।

(iv) ब्राह्मणवादी विचारों के प्रतिरोध के लिए इन संतों ने मंदिरों में संगीत, नृत्य, नाटक आदि का प्रदर्शन कर किया। जो कि वैचारिक प्रतिरोध को दर्शाता है।

(v) सभी जातियों की धर्म तक पहुँच, जाति प्रथा का विरोध, ब्राह्मणवादी वर्चस्व का विरोध आ जैसे सामाजिक तत्व आंदोलन में सामाजिक व्यवस्था के प्रति विरोध को दर्शाते है।

धर्म के प्रति विरोध -

(i) धार्मिक कर्मकाण्ड, आडंबर, पुरोहितवाद, संस्कारवाद के विरोध की प्रवृत्ति तथा वैदिक धर्म पर बल।

(ii) धार्मिक ग्रंथों में संस्कृत की जगह तमिल का प्रयोग किया गया।

(iii) दक्षिण भारतीय स्थानीय धार्मिक प्रथाओं को पुनर्जीवित करने के प्रयास, आदि।

तथापि संश्लेषण व सहयोग की प्रवृत्ति भी मौजूद थी -

(i) धार्मिक जैसे शिक्षण संस्थानों में सभी को प्रवेश।

(ii) उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय देवताओं का एकीकरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दुर्गा → कोरकई
तिरुणु → मेयॉन
viii) राजाओं द्वारा वैधता प्राप्ति हेतु धर्म का उपयोग आदि।

वास्तुतः अलवार व नायनार ~~भक्ति आंदोलन~~ ~~[illegible]~~ विभिन्न का विरोध, बाह्य प्रभावों द्वारा प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति, स्थानीय तत्वों के ह्रास का प्रतिरोध आदि तत्वों के प्रतिनिधि के रूप में प्रकट होता है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) गुप्त काल तथा उत्तर-गुप्त काल के दौरान कृषि क्षेत्र में ज्ञान व तकनीक के विकास ने कृषिगत गतिविधियों की प्रगति तथा प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। चर्चा कीजिये। 20

During the Gupta and post-Gupta period, the development of knowledge and technology in the agricultural sector contributed significantly to the progress and spread of agricultural activities. Discuss. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राचीन भारतीय इतिहास के बहुआयामी विकास में राजनीतिक- आर्थिक- सामाजिक- तकनीकी- सांस्कृतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों ने न केवल अपने विकास, बल्कि आपसी सहयोग द्वारा एक-दूसरे के विकास को भी प्रेरित- प्रभावित किया है
इसी प्रकार की भूमिका को गुप्त व गुप्तोत्तर काल में ज्ञान व तकनीक द्वारा कृषि के प्रसार में देखा जा सकता है

गुप्तकाल-

(i) अमरसिंह के अमरकोश में कई फसलों के उल्लेख। खरीफ रबी

(ii) वराहमिहिर की बृहत्संहिता में फसल चक्रीकरण, फसल विविधीकरण की विधियों का उल्लेख। फलत: न केवल कृषि क्षेत्र का प्रसार हुआ, बल्कि उत्पादकता भी बढ़ी।

(iii) बृहत्संहिता में बागानी कृषि, संकर बीजों का उल्लेख।

(iv) गणित के विकास ने बाँध, नहर के विकास को बढ़ावा दिया → सिंचाई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this s

व्यवस्था के प्रसार के कारण कृषि गतिविधियाँ विस्तारित हुईं।
iv) फलों के किण्वीकरण द्वारा प्रसंस्कृत उत्पादों की वृद्धि ने कृषकों की आय बढ़ाई। जैसे रसायन आदि क्षेत्रों का विकास।
v) सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण, कुएँ खोदने की नवीन विधियाँ आदि ने भी कृषि विस्तार किया।

उत्तर गुप्त काल -
i) ज्योतिर्विज्ञान के बढ़ते प्रभाव से बीजों को बोने के समय, काटने के समय आदि ज्ञान का विस्तार → फसल उत्पादन बढ़ा।
ii) बृहत्संहिता में जलवायु विज्ञान, वर्षा, कीटनाशक आदि पर व्यापक उल्लेख → जनसामान्य तक इनके प्रसार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीमाएँ -
i) ज्ञान व तकनीक का भौगोलिक विस्तार सीमित था।
ii) भूमि अनुदान प्रथा व सामंतीकरण के नकारात्मक प्रभाव। - बंधुआ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मजदूरी, बेगार प्रथा, स्त्रियों/लिओं का उद्भव, सामंती शोषण आदि ने इसे नकारात्मक दुष्प्रभावित किया।

iii) कालांतर में रूढ़िवादिता, नवीन प्रयोगों पर प्रतिबंध आदि प्रवृत्तियों ने ज्ञान-तकनीक के क्षेत्र को भी सीमित कर दिया था।

उपर्युक्त विश्लेषणानुसार कहा जा सकता है कि ज्ञान व तकनीक के विकास ने प्रारंभिक गुप्त काल में नागरिकों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया परंतु बाद के काल में इसकी उपयोगिता में अवश्य कमी आने लगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) ह्वेनसांग तथा फाह्यान के यात्रा विवरण सिर्फ धार्मिक स्थिति की जानकारी तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दशाओं पर भी प्रकाश डालते हैं। स्पष्ट कीजिये। 15

The travelogues of Hiuen-Tsang and Fa-Hien are not limited to information on religious status but also highlight the political, social and economic conditions of India. Elucidate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

चीनी लेखक ह्वेनसांग (सी-यू-की) व फाह्यान (फो-क्यो-की) के लेखन का भारतीय इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

धार्मिक विवरण -

(i) फाह्यान = तक्षशिला नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध शिक्षा का उल्लेख।
- बौद्ध विहार, स्तूपों, बौद्ध धार्मिक ग्रन्थों का विवरण।
- हिंदू धर्म के प्रसार का उल्लेख।

(ii) ह्वेनसांग = पतनशील पाटलिपुत्र का उल्लेख।
- कन्नौज में आयोजित बौद्ध सभा का वर्णन।
- मंदिरों की विभिन्न शैलियों, जैन धर्म की उपस्थिति (गुजरात क्षेत्र में) का वर्णन।

राजनीतिक विवरण

(i) फाह्यान = चन्द्रगुप्त II के शासन काल का विवरण।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

- राज्य मंत्रीपरिषद, अधिकारियों का उल्लेख।
- सामान्यतः मृत्युदण्ड न दिए जाने का उल्लेख।

ह्वेनसांग = हर्षकालीन शासन व्यवस्था का विवरण।
- सामंतवादी व्यवस्था के उल्लेख प्राप्त होना।
- यात्रा के दौरान लूट लिए जाने का उल्लेख → कमजोर कानून व्यवस्था।

सामाजिक –

फाह्यान = विभिन्न जातियों, श्रेणियों का उल्लेख मिलता है।
- रीति-रिवाजों, प्रथाओं, मान्यताओं के विवरण।

ह्वेनसांग = अस्पृश्यता, कठोर जाति प्रथा के साक्ष्य।
- शूद्रों की स्थिति में सुधार। शूद्र कृषक, शूद्र अधिकारी का उल्लेख।
- वैश्यों की दशा में गिरावट।
- अन्य सामाजिक वर्गों के उल्लेख।

आर्थिक –

फाह्यान = आर्थिक संपन्नता का विवरण।
- विभिन्न सिक्कों, नगरों, श्रेणियों के उल्लेख।
- व्यवसाय व व्यापार के साक्ष्य।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देवसांग- आर्थिक संकट का दौर होना जैसे भूमि अनुदान प्रथा में बढ़ोतरी, सामंतवादी व भूमि आधारित अर्थव्यवस्था
• सिक्कों की अपर्याप्तता आदि।
वर्णानुसार कहा जा सकता है कि फाह्यान व ह्वेनसांग के विवरण तत्कालीन समय की पूर्ण अभिव्यक्ति को समाहित करते प्रतीत होते हैं।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सातवीं सदी के आरंभ से ही कन्नौज भारत की राजनीति का केंद्रबिंदु बन गया जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष की स्थिति पैदा की। कथन के संदर्भ में त्रिपक्षीय संघर्ष के कारणों तथा प्रभाव को बताएँ। 20

Kannauj became the focal point of Indian politics since the beginning of the seventh century which created the situation of tripartite struggle. In the context of the statement, discuss the causes and effect of the tripartite struggle. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राचीन भारतीय
इतिहास में समय-समय
पर व शासकों के
अनुसार विभिन्न
नगर राजनीति के
महत्वपूर्ण केन्द्र
बनते - बिगड़ते
रहे हैं। जैसे
मौर्यकाल में मगध
तो मौर्योत्तर काल में

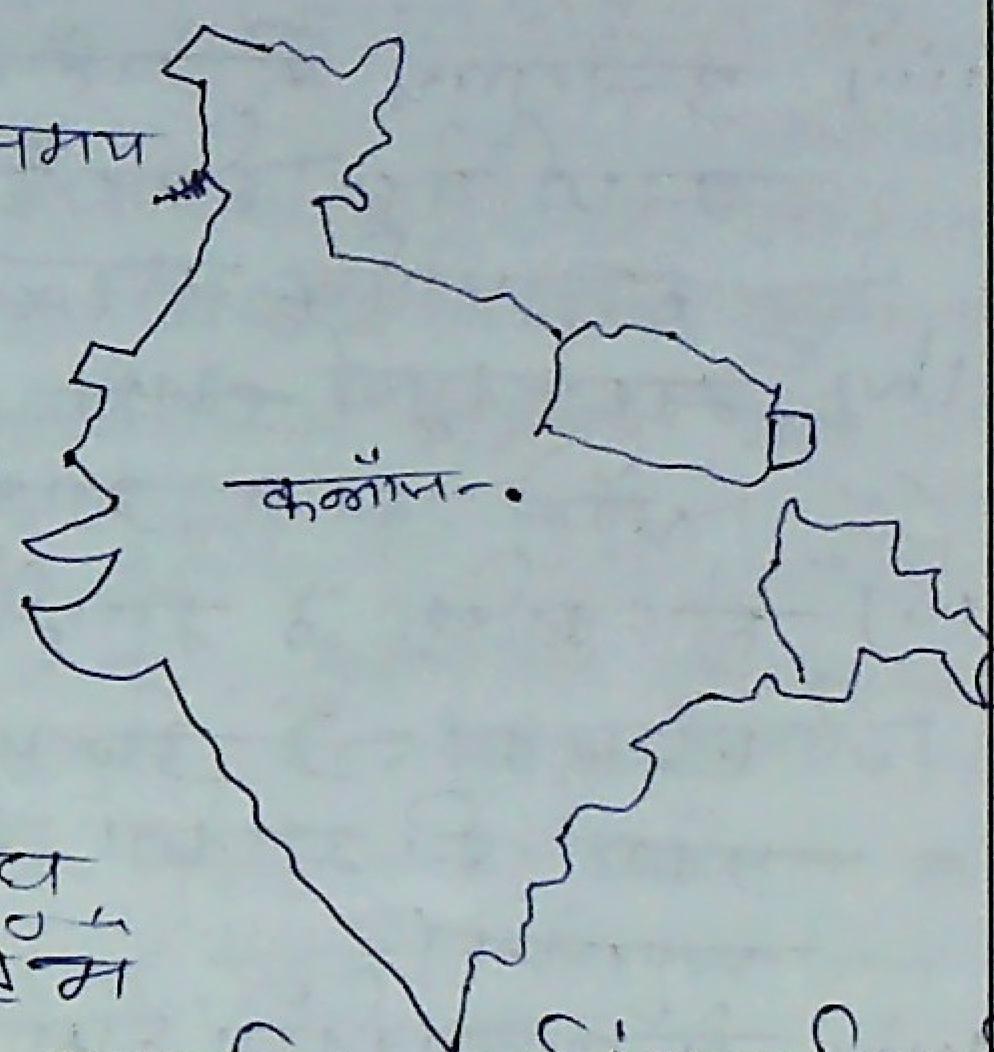

पुरुषपुर, उज्जैन, नासिक, कलिंगनगरी आदि।
इसी क्रम में 7th CE में कन्नौज भारत
की राजनीति के केंद्र के रूप में उभरा।

कारण -

(i) हर्ष का शासन व उसका साम्राज्य प्रसार
(ii) महत्वपूर्ण प्रशासनिक व शैक्षिक केंद्र

कालांतर में कन्नौज पर
अधिकार को लेकर गुर्जर-प्रतिहार,
पाल व राष्ट्रकूट शासकों में 8th-9th
CE में आपसी संघर्ष हुआ।

कारण -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(i) कन्नौज गंगा घाटी क्षेत्र में स्थित था → उपजाऊ भूमि क्षेत्र।
(ii) भौगोलिक स्थिति → पूर्व, पश्चिम व दक्षिण तीनों दिशाओं में निगरानी संभव थी।
(iii) उत्तरापथ के महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित होने के कारण व्यापारिक महत्व।
(iv) महत्वपूर्ण ~~स्थान~~ व्यावसायिक केन्द्र जैसे वस्त्र, आभूषण निर्माण।
(v) सांस्कृतिक व धार्मिक सहिष्णुता व समन्वय → अन्य क्षेत्रों में भी इसी प्रकार की भावना का प्रसार करने में सहायता।
(vi) तीनों शक्तियों द्वारा अपनी शक्ति के प्रसार का प्रयास।
(vii) महत्वाकांक्षी शासकों की भूमिका। जैसे प्रतिहार = मिहिर भोज
पाल = देवपाल
राष्ट्रकूट = गोविंद III ।
(viii) हर्ष की ~~पतन~~ मृत्यु के पश्चात कन्नौज में राजनीतिक अस्थिरता।

प्रभाव -
(i) आपसी संघर्ष के कारण तीनों शक्तियों को आर्थिक-सैनिक हानि। वे अपना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शासन क्षेत्र भी व्यापार नहीं रख पाए।

iii) संयुक्त मोर्चा निर्माण का अभाव → राजनीतिक शासकों की मूल क्षेत्र पर अधिकार की महत्त्वाकांक्षा बढ़ी।

iiii) केन्द्रीय शक्ति का ह्रास → सामंतों की शक्ति में वृद्धि से सामंतीकरण को बढ़ावा मिला।

iiv) कन्नौज का व्यापक क्षति → कई स्थापत्य, शिक्षा केंद्र क्षतिग्रस्त हुए।

iv) इन क्षेत्रों में राजनीतिक शून्यता का उभार → नए वंशों का उदय जैसे परमार, सोलंकी, कल्याणी के चालुक्य, कलचुरी, सेन वंश आदि।

ivi) सामाजिक रीति-रिवाजों की कठोरता बढ़ी क्योंकि बाह्य प्रभावों को सीमित करने के प्रयास किए जाने लगे।

कहा जा सकता है कि त्रिपक्षीय संघर्ष ने न केवल तात्कालिक, बल्कि दीर्घकालिक प्रभावों को जन्म दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) शताब्दियों तक स्त्रियों की दयनीय सामाजिक स्थिति के लिये जिम्मेदार अधिकांश रूढ़िगत प्रथाएँ गुप्त काल में विकसित हुई दिखाई देती हैं। विश्लेषण कीजिये। 15

The centuries old conservative practices responsible for the miserable social status of women appear to have evolved in the Guptas period. Analyze. 15

इतिहास का कोई भी काल अपने आपमें पूर्णतः सफल अथवा पूर्णतः विफल नहीं रहता है गुप्तकाल के संदर्भ में भी यह बात पूर्णतः लागू होती है।

जहाँ एक ओर यह काल साम्राज्य विस्तार, आर्थिक संपन्नता तथा कला, तकनीकी में प्रगति का काल था, तो सामाजिक क्षेत्र में कई प्रथाएँ भी इसी काल में शुरू हुई थी जैसे-

(i) बाल विवाह का प्रारंभ

(ii) सती प्रथा का प्रारंभ प्रारंभिक उल्लेख = एरण अभिलेख

(iii) पर्दा प्रथा। कालिदास के ग्रंथों में वर्णन

(iv) विधवा पुनर्विवाह का कम होते जाना

(v) दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा का आरंभ

(vi) अस्पृश्यता का आरंभ इसका मुख्य नकारात्मक प्रभाव आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं पर पड़ा।

(vii) महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का कम हो जाना
(viii) वैवाहिक मामलों में स्त्रियों की सहमति का स्तर और भी कम हो गया।
(ix) दहेज प्रथा के साक्ष्य।
(x) शिक्षा में महिलाओं का स्तर और भी न्यून हो चला।

तथापि कई सकारात्मक उल्लेख भी मिलते हैं -
(i) प्रभावती गुप्त द्वारा शासन संचालन।
(ii) याज्ञवल्क्य स्मृति = स्त्रियों को धन का अधिकार है।
(iii) बृहस्पति स्मृति = पुत्री पुत्र के समान है।
(iv) पुराणों में महिलाओं को वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन की अनुमति दिया जाना आदि।

वस्तुतः पितृसत्तात्मक समाज, महिलाओं की दयनीय स्थिति आदि की शुरुआत एकाएक गुप्तकाल में शुरु न होकर वैदिक काल, महाजनपद काल तथा बाद के कालों से निरंतर चली आ रही थी।

परंतु विदेशी जातियों के प्रवेश, जनजातियों के प्रवेश, वर्णसंकरों की बढ़ती संख्या, ब्राह्मण वर्ग द्वारा अपनी शक्ति विस्तार, नगरीय अर्थव्यवस्था

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

के कारण भूमि के बढ़ते महत्त्व उत्पादि कारकों ने महिलाओं पर प्रतिबंधों को और कठोर बनाया।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation